प्लवङ्गदूत में प्रकृति–चित्रण

नीलू पाण्डेय

प्रकृति चित्रण के माध्यम से कवि को अपने विचारों की अभिव्यक्ति का अवसर प्राप्त होता है। वह प्रकृति को लक्ष्य करके जन सामान्य को कुछ उपदेश भी देता है, इस दृष्टि से भी साहित्य में प्रकृति–चित्रण उपादेय हे। कालिदास की प्रकृति मानव–जीवन से मिश्रित है। प्रकृति को मानव जीवन से पृथक नहीं देखा जा सकता। वनेश्वर पाठक के काव्य में प्रकृति उस पराकाष्ठा पर नहीं पहुॅच पायी है। इन्होनें अवसर पर प्रकृति के किसी भी उपादान पर दृष्टिपात मात्र कर लिया है। इस दृष्टि से वनेश्वर पाठक की प्रकृति के प्रति भावना बहुत संकुचित है। कवि पाठक ने प्रकृति के प्रति अपना धार्मिक अनुराग ही व्यक्त किया है।

कवि वनेश्वर पाठक भारतीय धर्म–संस्कृति के अनुयायी है, देश भक्त है और प्रकृति प्रेमी है। इनके द्वारा प्रणीत इस आलोच्य काव्य प्लवङ्गदूत में प्रकृति के कतिपय मनोहर चित्र हैं, जिन्हें देखने से कवि की भावनाओं एवं उनके वर्णन–कौशल का पता चलता है। यदि कालिदास का दूत मेघ प्रकृति–जगत् से है तो इनका काव्य दूत भी वन्य प्राणि वानर है।